गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; जून, २०१९

बा-बापू१५०
१८६९-२०१९

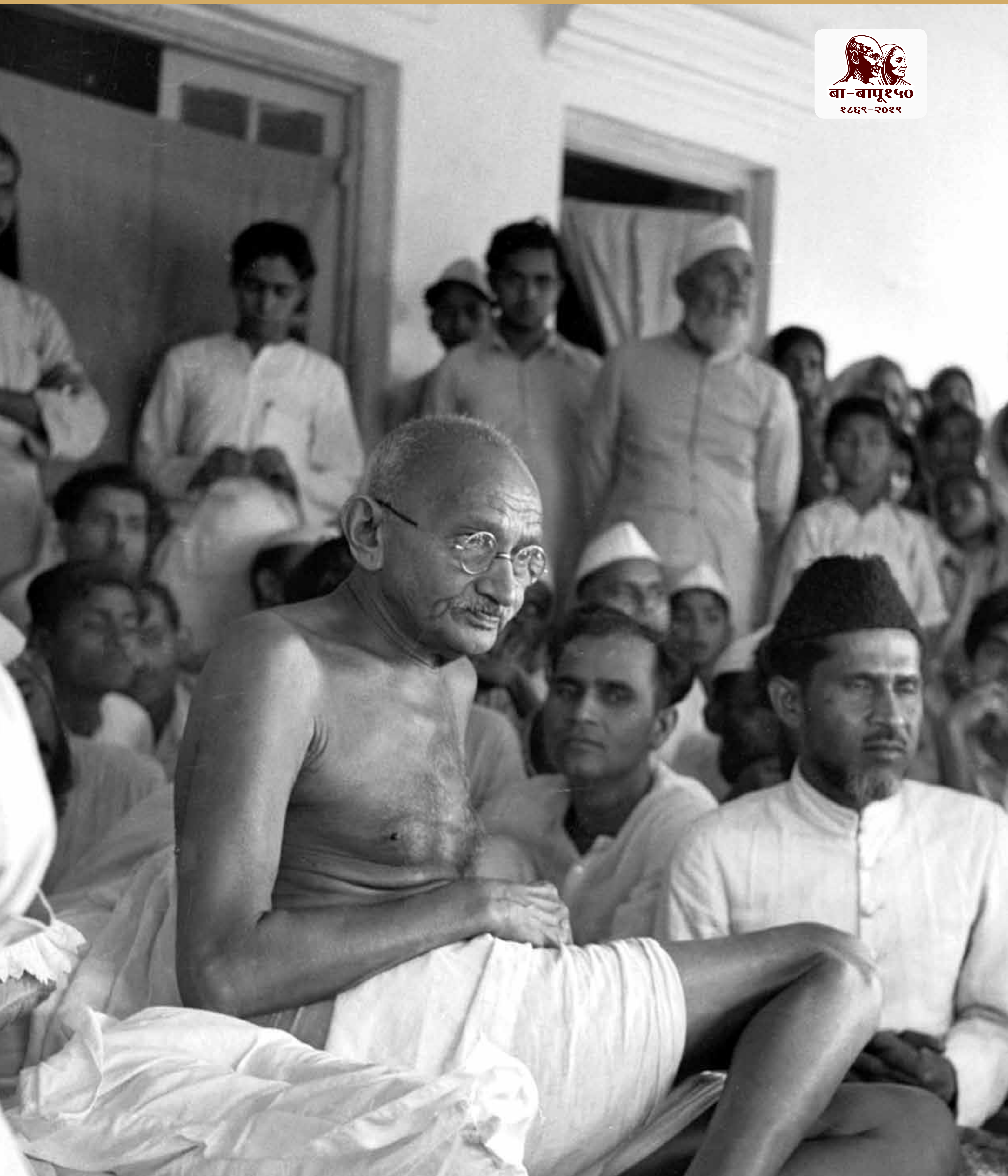

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित -

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-१, अंक ५ □ जून, २०१९

सच्चे सत्याग्रह में न तो निराशा है, न पराजय।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में- ....**पृष्ठ**

संपादकीय..

पहला आघात..१

कस्तूरबा जीवन-झांकीः समय के दायरे में - *(डॉ. सुदर्शन आयंगार)*..३

आज की समाज रचना - *(डॉ. भवरलालजी जैन)*...................४

How Gandhi Matters: ५

फाउण्डेशन की गतिविधियां...................................... ६-९

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव - 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई-मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला।

मुखपृष्ठ छायाचित्र: महात्मा गाँधी, मुस्लिम लिग के सदस्यों के साथ बैठक के दौरान, जहानाबाद (बिहार) मार्च १९४४;
सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

तू नित्य, निरंतर बहता जा

जीवन बहते रहना चाहिए नित्य, निरंतर, जैसे पानी। पानी का गुण धर्म है बहते रहना, पानी का मतलब ही जीवन है, अगर हम पानी को संस्कृत शब्द में देखें तो इसका पर्याय 'जलः' है। जल जीवन का आधार है। बहना उसका स्वभाव है वह भी सहज रूप से, बहने के लिए किसी भी तरह की व्यूह रचना की जरूरत नहीं रहती, बस वह तो हो ही जाता है, सहज रूप से। वह प्रवाह है, केवल अकेला बहता नहीं जाता, उनके संपर्क में आने वाले कई जीव सृष्टि की भी देखभाल करता है, बिना किसी भेदभाव के। उसकी उपस्थिति दूसरों को जीवन प्रदान करती है।

जीवन बदलते रहना चाहिए और यह परिवर्तन वैचारिक रूप में दिखना चाहिए। आज से दस साल पहले भी वही विचार और आज भी वही विचार? हिंदी में एक प्रेरणा गीत है, उसकी एक पंक्ति इस तरह से है 'बहता पानी निर्मला, बंधा गंदा होए' जो रुक जाता है वह अपने अस्तित्व को भी रोक देता है। यहाँ स्थिरता की बात नहीं है। प्रवाही जीवन का उत्कृष्ट उदाहरण गाँधी के जीवन में दिखाई देता है। इसलिए वे कहते हैं कि 'सत्य की अपनी खोज में, मैं अनेक विचारों को त्यागता गया हूँ और नई-नई बातें सीखता रहा हूँ।' यह प्रवाही जीवन का चिह्न है। गाँधी की विशेषता यह थी कि उनके पास आपके लिए समय था, हर एक व्यक्ति के लिए उनके पास समय था। उन्होंने जिस तरह से दूसरों को समझा या दूसरों की सेवा की शायद ही कोई कर सकता है। केवल मानव जाति की ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी आपकी और मेरी समस्या के लिए उन्होंने परवाह की है। उनकी उपस्थिति दूसरों को प्रेरित करती थीं। सच में वे एक प्रवाह की तरह ही थे, हमेशा बहते रहे। दूसरों के लिए, बिना किसी भेदभाव के। जैसे पानी। नारायणभाई देसाई की पंक्तियां उनके जीवन का संदेश बयां करती हैं...

''जीवन को तू यज्ञ समझ ले, सर्व के हेतु विचार।
सब के भले में तेरा भला है जान ले तू अनिवार।''

जब हम प्रवाही जीवन की बात करते हैं तो उसे नैतिक रूप से समझने की आवश्यकता है। आज कल हम अपनी नैतिकता को कई हिस्सों में बांटते दिखाई देते हैं, जब हमें कुछ बात करनी होती है तब गंभीर रूप से करते हैं, किंतु जब उन्हें आचरण में लाने की बात आती है, तब कई तरह के विधानों के साथ हम अपने आपको न्याय करने की स्थिति में लाते हैं पर आचरण की स्थिति में नहीं। हमने खुद को विभिन्न भागों में बांट दिया है, परंतु गाँधी ने अपने आपको ऐसे किसी भी नैतिक बंटवारे में कभी नहीं बांटा, क्योंकि उनके आचार और विचार में साम्यता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। सत्य और अहिंसा का आचरण उनके लिए व्रत से ज्यादा जीवन का हिस्सा बन गया था और वह भी सहज रूप से।

'खोज गाँधीजी की' इस अंक में गाँधीजी की आत्मकथा से अगला प्रकरण, डॉ. सुदर्शन आयंगार द्वारा संकलित 'कस्तूरबा जीवन-झांकीः समय के दायरे में', डॉ. भवरलाल जैन की कृति 'आज की समाज रचना' से अगला लेख, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा इन्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ एडवान्स्ड स्टडीज, शिमला के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित होने वाला सेमिनार "How Gandhi Matters" की संकल्पना तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा'

पहला आघात

'खोज गाँधीजी की' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। पहला आघात की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण। **– संपादक**

बम्बई से निराश होकर मैं राजकोट पहुँचा। वहाँ अलग दफ़्तर खोला। गाड़ी कुछ चली। अर्जियाँ लिखने का काम मिलने लगा और हर महिने औसत रु. ३०० की आमदानी होने लगी। अर्जी-दावे लिखने का यह काम मुझे मेरी होशियारी के कारण नहीं मिलने लगा था, कारण था वसीला। बड़े भाई के साथ काम करनेवाले वकील की वकालत जमी हुई थी। उनके पास जो बहुत महत्त्व के अर्जी-दावे आते अथवा जिन्हें वे महत्व का मानते, उनका काम तो बड़े बारिस्टर के पास ही जाता था। उनके गरीब मुवक्किलों के अर्जी-दावे लिखने का काम मुझे मिलता था।

बम्बई में कमीशन नहीं देने की मेरी जो टेक थी, मानना होगा कि वह यहाँ कायम न रही। मुझे दोनों स्थितियों का भेद समझाया गया था। वह यों था: बम्बई में सिर्फ दलाल को पैसे देने की बात थी; यहाँ वकिल को देने हैं। मुझ से कहा गया था, कि बम्बई की तरह यहाँ भी सब बारिस्टर बिना अपवाद के अमुक प्रतिशत कमीशन देते हैं। अपने भाई की इस दलील का कोई जवाब मेरे पास न था: ''तुम देखते हो कि मैं दूसरे वकील का साझेदार हूँ। हमारे पास आनेवाले मुकदमों में से जो तुम्हें देने लायक होते हैं, वे तुम्हें देने की मेरी वृत्ति तो रहती ही है। पर यदि तुम मेरे मेहनताने का हिस्सा मेरे साझी को न दो, तो मेरी स्थिति कितनी विषम हो जाय? हम साथ रहते हैं, इसलिए तुम्हारे मेहनताने का लाभ मुझे तो मिल ही जाता है। पर मेरे साझी का क्या हो? अगर वही मुकदमा वे किसी दूसरे को दें, तो उसके मेहनताने में उन्हें जरूर हिस्सा मिलेगा।'' मैं इस दलील के भुलावे में आ गया। और मैंने अनुभव किया कि अगर मुझे बारिस्टरी करनी है, तो ऐसे मामलों में कमीशन न देने का आग्रह मुझे नहीं रखना चाहिये। मैं ढीला पड़ा। मैंने अपने मन को मना लिया, अथवा स्पष्ट शब्दों में कहूँ तो धोखा दिया। पर इसके सिवा दूसरे किसी भी मामले में कमीशन देने की बात मुझे याद नहीं है।

यद्यपि मेरा आर्थिक व्यवहार चल निकला, पर इन्हीं दिनों मुझे अपने जीवन का पहला आघात पहुँचा। अंग्रेज अधिकारी कैसे होते हैं, इसे मैं कानों से तो सुनता था, पर आँखों से देखने का मौका मुझे अब मिला।

पोरबंदर के भूतपूर्व राणा साहब को गद्दी मिलने से पहले मेरे भाई उनके मंत्री और सलाहकार थे। उन पर इस आशय का आरोप लगाया गया था कि उन दिनों उन्होंने राणा साहब को गलत सलाह दी थी। उस समय के पोलिटिकल एजेण्ट के पास यह शिकायत पहुँची थी और मेरे भाई के बारे में उनका खयाल ख़राब हो गया था। इस अधिकारी से मैं विलायत में मिला था। कह सकता हूँ कि वहाँ उन्होंने मुझ से अच्छी दोस्ती कर ली थी। भाई

कस्तूरबा गाँधी तथा महात्मा गाँधी, अबोटाबाद, नवम्बर, १९३८

ने सोचा कि इस परिचय का लाभ उठाकर मुझे पोलिटिकल एजेण्ट से दो शब्द कहने चाहिए और उन पर जो खराब असर पड़ा है, उसे मिटाने की कोशिश करनी चाहिए। मुझे बात बिलकुल अच्छी न लगी। मैंने सोचा: मुझ को विलायत के न कुछ से परिचय का लाभ नहीं उठाना चाहिये। अगर मेरे भाई ने कोई बुरा काम किया है, तो सिफारिश से क्या होगा? अगर नहीं किया है, तो वे विधिवत् प्रार्थना - पत्र भेजें अथवा अपनी निर्दोषता पर विश्वास रखकर निर्भय रहें। यह दलील भाई के गले न उतरी। उन्होंने कहा, ''तुम काठियावाड़ को नहीं जानते। दुनियादारी अभी तुम्हें सीखनी है। यहाँ तो वसीले से सारे काम चलते हैं। तुम्हारे सामना भाई अपने परिचित अधिकारी से सिफारिश के दो शब्द कहने का मौका आने पर दूर हट जाए, तो यह उचित नहीं कहा जायगा।''

मैं भाई की इच्छा को टाल नहीं सका। अपनी मर्जी के खिलाफ मैं गया। अफसर के पास जाने का मुझे कोई अधिकारी न था। मुझे इसका खयाल था कि जाने में मेरा स्वाभिमान नष्ट होगा। फिर भी मैंने उससे मिलने का समय माँगा। मुझे समय मिला और मैं मिलने गया। पुराने परिचय का स्मरण कराया, पर मैंने तुरन्त ही देखा कि विलायत और काठियावाड़ में फर्क है। अपनी कुर्सी पर बैठे हुए अफसर और छुट्टी पर गए हुए अफसर में भी फर्क होता है। अधिकारी ने परिचय की बात मान ली, पर इसके साथ ही वह अधिक अकड़ गया। मैंने उसकी अकड़ में देखा और आँखों में पढ़ा, मानो वे कह रही हों कि 'उस परिचय का लाभ उठाने के लिए तो तुम नहीं आये हो न?' यह समझते हुए भी मैंने अपनी बात शुरु की। साहब अधीर हो गए। बोले, ''तुम्हारे भाई प्रपंची हैं। मैं तुमसे ज्यादा बातें सुनना नहीं चाहता। मुझे समय नहीं है। तुम्हारे भाई को कुछ कहना हो तो वे विधिवत् प्रार्थना पत्र दें।'' यह उत्तर पर्याप्त था, यथार्थ था। पर गरज तो बावली होती है न? मैं अपनी बात कहें जा रहा था। साहब उठे, ''अब तुम्हें जाना चाहिए।''

मैंने कहा, ''पर मेरी बात तो पूरी सुन लीजिए!''

साहब खूब चिढ़ गए। ''चपरासी, इसे दरवाजा दिखाओ!''

'हजूर' कहता हुआ चपरासी दौड़ा आया। मैं तो अब भी कुछ बड़बड़ा ही रहा था। चपरासीने मुझे हाथ से धक्का देकर दरवाजे के बाहर कर दिया।

साहब गए। चपरासी गया। मैं चला, अकुलाया, खीझा। मैंने तुरंत एक पत्र घसीटा: ''आपने मेरा अपमान किया है। चपरासी के जरिये मुझ पर हमला किया है। आप माफी नहीं मानेंगे, तो मैं आप पर मानहानि का

विधिवत् दावा करुँगा।'' मैंने यह चिट्ठी भेजी। थोड़ी ही देर में साहब का जवाब दे गया। उसका सार यह था:

''तुमने मेरे साथ असभ्यता का व्यवहार किया। जाने के लिए कहने पर भी तुम नहीं गये, इससे मैंने जरुर अपने चपरासी को तुम्हें दरवाजा दिखाने के लिए कहा। चपरासी के कहने पर भी तुम दफ़्तर से बाहर नहीं गये, तब उसने तुम्हें दफ़्तर से बाहर कर देने के लिए आवश्यक बलका उपयोग किया। तुम्हें जो करना हो सो करने के लिए तुम स्वतंत्र हो।''

यह जवाब जेब में डालकर मैं मुँह लटकाये घर लौटा। भाई को सारा हाल सुनाया। वे दु:खी हुए। पर वे मुझे क्या तसल्ली देते? मैंने वकील मित्रों से चर्चा की। मैं कौन दावा दायर करना जानता था? उन दिनों सर फिरोजशाह मेहता अपने किसी मुकदमें के सिलसिले में राजकोट आये हुए थे। मेरे जैसा नया बारिस्टर उनसे कैसे मिल सकता था? पर उन्हें बुलानेवाले वकील के द्वारा पत्र भेजकर मैंने उसकी सलाह पुछवायी। उनका उत्तर था: ''गाँधी से कहिये, ऐसे अनुभव तो सब वकील-बारिस्टरों को हुए होंगे। तुम अभी नए ही हो। विलायत की खुमारी अभी तुम पर सवार है। तुम अंग्रेज अधिकारियों को पहचानते नहीं हो। अगर तुम्हें सुख से रहना हो और दो पैसे कमाने हों, तो मिली हुई चिट्ठी फाड़ डालो और जो अपमान हुआ है उसे पी जाओ। मामला चलाने से तुम्हें एक पाई का भी लाभ न होगा। उलटे, तुम बरबाद हो जाओगे। तुम्हें अभी जीवन का अनुभव प्राप्त करना है।''

मुझे यह सिखावन जहर की तरह कड़वी लगी, पर उस कड़वी घूँटको पी जाने के सिवा और कोई उपाय न था। मैं अपमान को भूल तो न सका, पर मैंने उसका सदुपयोग किया। मैंने नियम बना लिया: ''मैं फिर कभी अपने को ऐसी स्थिति में नहीं पड़ने दूँगा, इस तरह किसी की सिफारिश न करूंगा।'' इस नियम का मैंने कभी उल्लंघन नहीं किया। इस आघात ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.८७-९०, क्रमश:

सबके साथ बंधुता।

मेरा नीतिशास्त्र मुझे न केवल इस बात का दावा करने की अनुमति देता है, अपितु आदेश देता है, कि मैं बंदर ही नहीं बल्कि थोड़े और भेड़, शेर और तेंदुए, सांप और बिच्छु तक को अपना बंधु मानूं। इस प्राणियों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे भी मेरे प्रति ऐसा ही भाव रखें।

मेरे जीवन को शासित करनेवाला यह कठोर नीतिशास्त्र-और मेरी धारणा है कि प्रत्येक स्त्री-पुरुष पर इसी का शासन होना चाहिए - मेरे ऊपर यह इकतरफा दायित्व आरोपित करता है। यह आरोपण इसलिए है, कि केवल मनुष्य की सृष्टि ने ही ईश्वर को साकार किया है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हममें से कुछ लोग हमारी इस विशिष्ट हैसियत को नहीं पहचानते; हाँ, यह अवश्य है कि उस स्थिति में हमें अपनी विशिष्ट हैसियत का लाभ नहीं मिल पाता। यह उसी प्रकार है जैसे कि भेड़ों के बीच पले शेर को अपनी हैसियत तो उसकी है और जिस क्षण वह उसे पहचान जाता है, उसी क्षण वह भेड़ों पर अपना अधिकार जमाने लगता है। लेकिन शेर का छद्मवेश धारण करने से किसी भेड़ को कभी शेर का दर्जा प्राप्त नहीं हो सकता।

इस प्रस्थापना को सिद्ध करने के लिए कि मनुष्य की सृष्टि में ईश्वर साकार हुआ है, यह दिखाना जरूरी नहीं है कि सभी मनुष्यों के व्यक्तित्व में उसके दर्शन होते हैं। अगर एक आदमी के व्यक्तित्व में भी उसके दर्शन होते हैं तो वह पर्याप्त है। और, इस बात से कौन इंकार कर सकता है कि मानव जाति में जन्मे महान उपदेश कों में साक्षात ईश्वर के दर्शन हुए हैं?

मेरा विश्वास हैं कि मैं अहिंसा से ओतप्रोत हूँ। अहिंसा और सत्य मेरे दो फेफड़े है। मैं उनके बिना जीवित नहीं रह सकता। लेकिन मैं प्रतिक्षण, अधिकाधिक स्पष्टता के साथ, अहिंसा की असीम शक्ति और मानव की क्षुद्रता का अनुभव कर रहा हूँ।

- 'महात्मा गाँधी के विचार' से साभार, पृष्ठ क्र. ४०९-४१०

महात्मा गाँधी, सार्वजनिक प्रार्थना सभा के दौरान, बॉम्बे, सितम्बर १९४४

कस्तूरबा जीवन-झांकी: समय के दायरे में

'बा-बापू १५०' के अवसर पर फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य डॉ. सुदर्शन आयंगार के द्वारा कस्तूरबा की जीवन-झांकी तैयार की गई है। इस प्रयास में तीन अधिकृत दस्तावेजों का आधार लिया गया है। उनमें गाँधीजी की दिनवारी, संपूर्ण गाँधी वाङ्‌मय तथा अरुण गाँधी द्वारा लिखी गई Kasturba - A Life का समावेश होता है। उपरोक्त स्रोतों का उपयोग कर हमने बा की दिनवारी को हिंदी में लोगों के बीच रखने का प्रयास किया है। हम 'खोज गाँधीजी की' में कस्तूरबा की दिनवारी का यह आखिरी अंश प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

१९३८ – के मार्च महीने में ऐसे ही दूर के मुसाफरी में कलकत्ता और ओडीशा जाना हुआ था। गाँधीजी देलांग जा रहे थे अतः बा सहित कई महिलाएं जुड़ीं। बा, महादेव देसाई की पत्नी दुर्गा और कई महिलाएं जगन्नाथ पुरी दर्शन कर आईं। बापू ने जगन्नाथ पुरी के मुख्य महंत से मंदिर हरिजनों के लिए खोल देने के लिए मांग की थी जिसे नहीं माना गया। बापू दर्शन कर आई स्त्रीओं और महादेव पर बहुत गुस्सा हुए।

१९३९ का साल देश में राजा रजवाड़ों की मनमानी तौर पर राज्य चलाने से हुआ। कोंग्रेस चाह रही थीं कि राजा-रजवाडे लोकतंत्र के तौर तरीके अपनायें ताकि आज़ादी मिलने पर देश एक होकर चलाया जा सके। राजकोट का राजा ही बड़ा दबंग निकला और लोकतंत्र की हिमायत करने वाले आंदोलन करने वाली विशेष कर महिलाओं को गिरफ्त में लेना शुरू किया। सरदार वल्लभभाई पटेल की बेटी मणिबहन को गिरफ्तार कर लिया। सेवाग्राम में जब बा ने यह समाचार सुना तो तुरंत राजकोट के लिए रवाना हुईं और आंदोलन की बागडोर संभार्ली। ३ फरवरी १९३९ के रोज़ बा को नज़रबंद कर के राजकोट के पास त्रंबा गाँव के महल में भेज दिया गया। बापू को भी इसके बारे में पूरी जानकारी बाद में ही मिली। २७ फरवरी बापू राजकोट पहुँचे। तीन मार्च से बापू ने उपवास करना शुरू किया, बा को छुडवाने के लिए नहीं परंतु, सरदार पटेल के साथ सलाह मश्विरा कर जिस समाधान पर राजकोट नरेश पहुँचे थे उस पर अमल न करने के लिए। राज टस से मस नहीं हुएं। ५ मार्च को बा को बापू के पास भेजा गया, परंतु उन्हें विधिवत रिहा नहीं किया जाने से बापू ने बा को रात में त्रंबा वापस भेजा। ६ मार्च को बा को विधिवत छोड़ा गया। वाईसराय के सुझाव को नरेश ने मान्य रखा और बापू ने ७ मार्च को उपवास छोड़ा।

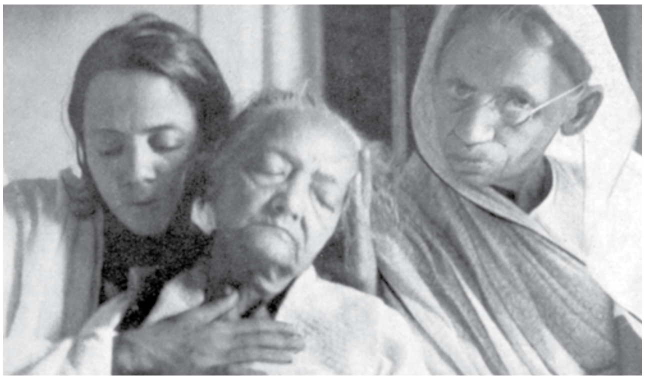

चिरनिद्रा में लीन बा, फरवरी २२, १९४४

कस्तूरबा के पार्थिव देह के पास शोकमग्न गाँधीजी

१९४० – १९४१ – बा की तबीयत राजकोट आंदोलन के वक्त ही ठीक नहीं थी। बाद में और नाजुक हुई। सेवाग्राम वापस आकर भी बा बीमार ही चलती रहीं। बापू ने तबीयत सुधारने के लिए बेटे देवदास के पास भेजा यह १९३९ और ४० का अरसा है ऐसा जान पड़ता है। उनकी तबीयत कुछ अच्छी हुई। दिल्ली में वह कुछ अरसा प्यारेलाल की बहन सुशीला नय्यर के साथ भी रहीं। वे उस समय मौलाना मेडिकल कोलेज से एम.डी. कर रही थीं। गरमी के दिन थे, सुशीला ने अपने कमरे में पानी डाल कर पंखे से कमरा ठंडा रखने की कोशिश की। बा को ब्रोंको न्युमोनिया हो गया। आराम के लिए उन्हें फिर देवदास के घर ही में रहना पड़ा। पर वे ठीक हो गईं और बाद में बा सेवाग्राम वापस आई। १९४१ का पूरा साल सेवाग्राम में ही बिताया ऐसा जान पड़ता है।

१९४२ – १९४४ – अगस्त के महीने तक कोई विशेष ब्योरा प्राप्त नहीं है, जून में जब लुई फिशर सेवाग्राम में गाँधी से मिलने आये थे उन्होंने बा का ज़िक्र किया है। अगस्त की शुरुआत में गाँधीजी मुंबई आये और उस समय बा उनके साथ थी। ८ अगस्त को कोंग्रेस की कमिटी में 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित हुआ और ९ अगस्त को तडके ही गाँधीजी की गिरफ्तारी हो गई। बा बापू के एवज में शाम की सभा में भाषण देने जा रही थीं और उनकी भी गिरफ्तारी हो गई। बा और सुशीला नय्यर दोनों की साथ ही पकड़ हुई और मुंबई की आर्थर रोड जेल ले जाया गया। परंतु बाद में बा और बापू दोनों ही अपने साथियों महादेव देसाई जिनकी एक सप्ताह में ही कारागार में ही मौत हो गई, प्यारेलाल, सुशीला, सरोजिनी नायडु और अन्य सहित आगाखान पेलेस में नज़रबंद हो गए। शादी के ६१ साल बाद बापू ने फिर से बा के लिए नये सिरे से पाठशाला लगाई और बा नियमित तौर से उत्साह से सीखने लगीं। १९४३ का साल इसी तरह से और बापू के उपवास से गुज़रा। बापू की हालत बहुत नाजुक हो गई थीं। बा ने भगवान से प्रार्थना की और बापू खतरे से उबरे। बा का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं ही था। शरीर कृष हो चुका था। जनवरी १९४४ में बा को दो बार दिल का दौरा पड़ा। फरवरी में हालत कमज़ोर होती गई और २२ फरवरी को बा ने अपना देह छोड़ दिया।

आज की समाज रचना

कोई भी विधायक-सांसद अधिकतम पाँच वर्ष तक ही मंत्री बने

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'गतिशील व प्रभावी समाज-रचना हेतु अपेक्षित परिवर्तन' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

डॉ. भवरलालजी जैन

मुद्रा निर्माण – मुद्रा निर्माण के लिए उचित बंधन होना चाहिए। बढ़ती कीमतों और मुद्रास्फीति का एक-दूसरे से अंतरसंबंध होता है। मुद्रा की तरह ही आर्थिक उत्तरदायित्व लेने के संबंध में भी राज्य और केंद्र दोनों सरकारों के लिए सीमाएँ निश्चित की जानी चाहिए।

कर मर्यादा – व्यक्ति, संस्थाओं पर थोपे जाने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों की अधिकतम सीमा तय की जानी चाहिए। उसमें स्थानीय स्वशासन निकायों के करों का भी समावेश होना चाहिए।

प्रशासनिक व्यय – कुल राजस्व का अधिकतम कितने प्रतिशत व्यय प्रशासनिक कार्यों में किया जाए, इसकी अधिकतम सीमा निर्धारित की जानी चाहिए। उसमें किसी प्रकार की खामी न रहे, इस बात की विशेष सावधानी बरती जाए। प्रशासन का खर्च कम करने की दृष्टि और प्रशासन कार्यक्षम एवं तत्पर बनाने के लिए मंत्रालयों, मंत्रियों और राजपत्रित व अन्य अधिकारियों की संख्या भी निर्धारित होनी चाहिए। केंद्रीय स्तर पर अधिकतम १० या १२ मंत्रालय हों। राज्यस्तर पर भी यह संख्या १५ से अधिक न हो। जितने विधायक या सांसद उतने ही मंत्री या उपमंत्री ऐसा चित्र निंदनीय है। यदि मंत्री नहीं हो सकते हैं तो विधायक क्यों बने, इस प्रवृत्ति को समाप्त करना चाहिए। कोई भी विधायक-सांसद अधिकतम पाँच वर्ष तक ही मंत्री बने, ऐसा कानूनी प्रावधान होना चाहिए।

सारांश यह है कि विकास, रोजगार सृजन, दरिद्रता उन्मूलन के नाम पर असीमित ऋण लेना, मुद्रा निर्मिति और प्रशासनिक व्ययों में अनवरत वृद्धि अपने भविष्य को गिरवी रखना या उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण अपने देश की अस्मिता और स्वतंत्रता से खेलने जैसा है। ऐसा खेल कोई भी सरकार न खेल सके इसलिए इस पर अंकुश आवश्यक हैं। जैसे-जैसे सामाजिक जीवन में सरकार की भूमिका कम होती जाएगी, वैसे-वैसे नागरिकों द्वारा स्वयं निर्णय लेने का सपना साकार होता जाएगा। इससे वे अपने विकास की दिशा स्वयं तय कर सकेंगे। सामाजिक जीवन से सरकार की भूमिका कम होने से नौकरशाही पर होने वाला खर्च कम होगा और बचे हुए धन का उपयोग जनहित के कार्यों में होने लगेगा।

सरकार में सुरक्षा व्यवस्था, गोपनीयता और विलंब को कम कर दें। सरकार के अस्तित्व और कार्य-शैली पर बंधन लगा दें तो सब कुछ ठीक हो गया, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है। ह्यूमन स्केप (सितंबर ९८) और आंदोलन (अगस्त ९८) नामक मासिक पत्रिकाओं में कहा गया है कि वर्तमान आर्थिक दुर्दशा और गृह कलह जैसी राजनैतिक स्थिति की जड़, देश में उचित प्रजातंत्र न होने या आवश्यकता से अधिक प्रजातांत्रिक स्थिति होने के कारण है? जनप्रतिनिधियों द्वारा, जनता के निर्णय प्रक्रिया की भागीदारी बनी रहे, यही प्रजातंत्र की मूल आत्मा है, प्रजातंत्र का मूल तत्त्व है। इस तत्त्व के वास्तविक उपयोग से जनप्रतिनिधियों और नौकरशाही पर जनता का दबाव बना रहना चाहिए। अनेक कारणों से वह उस रूप में विद्यमान नहीं है। इसीलिए आज हमारे देश में प्रजातंत्र के स्थान पर जनप्रतिनिधि तंत्र चल रहा है, ऐसा कहना पड़ता है। चुनाव तो कुछ विशेष वर्गों के सत्ता प्राप्ति का साधन बन गई है। इस परिस्थिति को परिवर्तित कर जागरूक, गैर सरकारी सामाजिक संस्थाओं के निर्माण के लिए उचित वातावरण का निर्माण करना चाहिए। सज्जनशक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्यों में से यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

सरकारी काम-काज प्रणाली की निर्णय प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी और उनके अधिकार बढ़ाने के लिए स्थानीय निकायों को सच्चे अर्थों में क्रियाशील बनाने के लिए, प्रजातंत्र की उपलब्धियों का लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने के लिए, समाज में परस्पर सहयोग, सामंजस्य और मित्रतापूर्ण वातावरण का निर्माण करना होगा जिससे लोग अपना भविष्य स्वयं बना सकें। इसलिए प्रशासनिक नियामक काम-काज प्रक्रिया में पारदर्शिता लाना होगा और काला धन, भ्रष्टाचार जड़ से समाप्त हो जाए, इसलिए समाज के मूल ढाँचे में परिवर्तन करना होगा। रचना एवं नीतियों में परिवर्तन करके नागरिकों को दृढ़ता से निम्नलिखित अधिकार संविधान के मूलभूत अधिकारों की सूची में समाहित करा लेना चाहिए।

क्रमश:

किसी को भी उच्च वर्ग और आम जनता के, राजा और रंक के बीच के बड़े भारी भेद को यह कहकर उचित नहीं मान लेना चाहिए कि पहले की जरूरतें दूसरे से बढ़ी हुई हैं, यह बेकार की दलील और मेरे तर्क का मजाक उड़ाना होगा। आज के अमीर और गरीब के भेद से दिल को बड़ी चोट पहुँचती है। विदेशी नौकरशाही और देश के रहनेवाले शहरी लोग गाँव के गरीबों का शोषण करते हैं। गाँववाले अन्न पैदा करते हैं और खुद भूखों मरते हैं। वे दूध पैदा करते हैं और उनके बच्चों को दूध की एक बूँद मयस्सर नहीं होती। यह कितना शर्मनाक है। हर एक को पौष्टिक भोजन, रहने के लिए उम्दा मकान, बच्चों की तालीम के लिए हर तरह के सुभीते और दवा-दारू की मदद मिलनी चाहिए।

– मो. क. गाँधी, *हरिजन सेवक, ३१-३-१९४६*

HOW GANDHI MATTERS:

Assessing the Relevance of Gandhian Solutions for India and the World in the 21st Century

We are organizing a joint seminar entitled "How Gandhi Matters: Assessing the Relevance of Gandhian Solutions for India and the World in the 21st Century" together with the Indian Institute of Advanced Study [IIAS], Shimla to take place at Gandhi Teerth from 22nd-25th August.

We have received a surfeit of good papers, some of which may be published in the forthcoming issues of Khoj Gandhi ki. ***- Editor***

Mohandas Karamchand Gandhi (1869-1948), as an unconventional political leader and thinker, is not easy to interpret and categorize. Yet admittedly, first and foremost, Gandhi was a democratic humanist whose influence surged in the firmament of the inter- and post-War periods of the 20th century in the context of anti-colonial national liberation movements in the Asian and African world. His extraordinary contribution continues to be relevant for the various transformations of nationalism in the subsequent phases (during the Cold War and post-Cold War) of supranational regional integration and capitalist globalisation, and the more recent de-globalisation or 'slowbalisation' caused by the rise of right-wing nationalism all over the world.

Gandhi entered on to the Indian political stage at a time when the prevailing descriptive and explanatory categories of political understanding and action had run out of steam. On the one hand, Congress Moderates had been proved to be irrelevant and ineffective; on the other, Congress Extremists had been reduced to the margins of law and politics by the powerful repressive colonial state apparatus on charges of preaching violence and sedition. Gandhi appeared as a flickering flame of political thought and action, lightening the seemingly dark and hopeless scenario with his courageous and innovative political strategy of nonviolence, satyagraha, and his goals of swaraj and swadeshi. No wonder that Gandhi has been differently, or indeed simultaneously, interpreted as a traditionalist (in view of his defence of varnashrama dharma minus the caste system, or his trenchant critique of modernity), as a modernist (viz. his anti-colonial nationalism and 'constructive politics'), and as a postmodernist (given his belief in cultural relativism and contextual truth). His 1909 political manifesto, Hind Swaraj or Indian Home Rule, is open to a hermeneutic interpretation that is conservative, liberal, and radical – all rolled into one.

How Gandhi combines his unique individualism and communitarianism is exemplified in his autobiography, The Story of My Experiments with Truth. Straddling diverse epistemological discourses, he underscored, on the one hand, the normative philosophical imperative regarding the purity of both ends and means, philosophical anti-statism and the privileging of civil society and conscientious individualism; on the other, he emphasized the experimental and pragmatic discovery of contextually valid truths, and the need to make contingent compromises on myriad issues. Committed to his 'constructive programme', which represented grassroots politics per se, he endeavoured to bring about the emancipation of Harijans, communal harmony between Hindus and Muslims, the widespread use of the charkha and khadi, the introduction of basic education, natural health care and hygiene, and the propagation of a rashtrabhasha, just to name some of his major initiatives.

All things considered, Gandhi certainly matters today not only for India, but for the world at large. Yet his contemporary global importance requires more explicit articulation: As the world faces an uncertain future, to what extent can Gandhian alternatives be availed of, for instance, to tackle the enormous increase in class and regional inequalities, or to confront the challenges to democracy due to capitalist globalisation? Do his ecumenical endeavours in establishing communal harmony offer solutions towards mitigating religious fundamentalism and terrorism, aggravated by the global rise of extreme-right parties and movements? Does the legacy of this prophet of nonviolence provide us with crucial clues towards deflecting a nuclear holocaust, or towards abating global warming? To find answers to the existential problems of our times, we are called upon to examine more rigorously Gandhi's ardent faith in truth and nonviolence. We need to understand the implications and consequences of his deep respect for religious pluralism (sarvadharmasambhava), coupled with his exemplification of ethical politics, as well as his emphasis on 'need rather than greed'-based consumption and proprietorship (in the form of aparigraha and trusteeship), defined by simple living and health-care, in harmony with nature. Our aim would then be to evaluate the way in which Gandhian precepts and practices, in private and public spheres, can instantiate a cosmopolitan global citizenship for planetary survival, practised by swadeshi nationalists in the global village.

The Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla, and the Gandhi Research Foundation (GRF), Jalgaon, are jointly convening a two-day international seminar to assess and reinvent Gandhian solutions to contemporary problems confronting India and the world. It is hoped that, with discursive inputs from a select group of eminent scholars and public intellectuals, this event, commemorating Mahatma Gandhi's 150th birth anniversary, will set the stage for highlighting how Gandhi matters today.

In line with the above introductory abstract, we have formulated some relevant themes that are to be discussed in six sessions,

1) Gandhi's Historical Contribution: Debates and Controversies, 2) Gandhi's Swaraj and its Relevance Today, 3) Gandhian Economics and Ecological Sustainability, 4) Gandhi's Sarvadharma Sambhava and his Discourse on Socio-Political Justice: Viable Solutions for India and the World?, 5) The Scope of Satyagraha in the 21st Century, 6) Gandhi, Science and Modernity: An Ambivalent Relationship?

- ***Mahendra Prasad Singh,*** *IIAS National Fellow, &*
Prof. Gita Dharampal, *GRF Dean of Research*

युवा शिविर में शिविरार्थियों के साथ संस्कार सिंचन के पदार्थ पाठ साझा करते हुए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता चंद्रकांत चौधरी

संस्कार सिंचन की ग्रामीण पाठशाला

सातपुडा स्थित गौर्यापाडाव में श्रम संस्कार शिविर का समापन

'बा-बापू १५०' ग्रामविकास कार्यक्रम के अंतर्गत चोपडा परिसर में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के माध्यम से विविध उपक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसके अंतर्गत सातपुडा की पहाडियों में स्थित गौर्यापाडाव गाँव में श्रम संस्कार और व्यक्तित्व युवा विकास निवासी शिविर आयोजित किया गया था। इस शिविर में योग, प्रार्थना, श्रमदान, सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुए। ३ से ६ मई २०१९ के दरम्यान यह शिविर आयोजित किया गया था।

श्रम संस्कार और व्यक्तित्व विकास शिविर में सातपुडा के गौर्यापाडाव, मेलाणे, शेणपाणी, मुल्यावतार, वैजापूर, डेढीयापाडा, वराड के कुल मिलाकर ३६ विद्यार्थी सहभागी हुए थे। गौर्यापाडाव के जिला परिषद स्कूलों में इस शिविर का आयोजन किया गया था।

शिविरार्थियों का योगदान

शिविरार्थियों ने गौर्यापाडाव परिसर में श्रमदान से लगभग ६० खड्डे खुदवायें है। पहली बारिश के बाद इस जगह पर पौधे लगाए जाएंगे। आँवला, सीताफल, आम आदि पौधों का रोपण किया जाएगा। इस शिविर के अंतर्गत परिसर की स्वच्छता भी की गई। शिविर में किशोर कुलकर्णी ने सुंदर हस्ताक्षर का महत्त्व तथा उपस्थित छात्रों को सुंदर हस्तार निकालने की तकनीक के बारे में बताया। उसी तरह डॉ. अयुब पिंजारी ने अंधश्रद्धा निर्मूलन, भुजंग बोबडे ने ऐतिहासिक विरासत का महत्त्व तथा जलगाँव जिला में स्थित विभिन्न ऐतिहासिक स्मारकों का परिचय प्रदान किया। सुधीर पाटील ने नियम, व्रत और व्यसन मुक्त युवा, विजय मोरे ने संघटनात्मक विकास, अमोघ जोशी ने आकाश दर्शन और खगोल विज्ञान, जितेंद्र महाजन ने वैयक्तिक और सार्वजनिक स्वच्छता, दिनेश दीक्षित ने व्यक्तित्व विकास, जेबराज डेविड ने वाडी प्रकल्प और चंद्रकांत चौधरी ने पर्यावरण का महत्त्व इन विषयों पर व्याख्यान दिए।

इस शिविर के लिए सागर चौधरी, गणेश चाफेकर, पद्मावती नाईक, चांदनी गोस्वामी, सुधीर पाटील, चेतन पाटील, वाल्मिक सैंदाणे, चंद्रकांत चौधरी, संदिप पाटील तथा गौर्यापाडाव गाँव के ग्रामस्थों ने सहायता की। ♦♦♦

व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलू पर प्रस्तुति करते हुए दिनेश दीक्षित

सहभागी प्रमाणपत्र प्राप्त कर अपने हौसले को बुलंद करते हुए शिविरार्थी वृंद

वाकोद गाँव में संपन्न हुआ श्रम संस्कार शिविर

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से वाकोद स्थित जैन फार्म हाउस में 'श्रम संस्कार शिविर' का आयोजन किया गया था। जिसमें वाकोद तथा आस पास के गाँव से विद्यार्थी सहभागी हुए थे। शिविर में सहभागी विद्यार्थियों को क्षेत्रीय मुलाकात, आकाश दर्शन, व्यक्तित्व विकास, प्रेरणादायी तथा जीवन उपयोगी विषय के संदर्भ में जानकारी दी गई।

जैन फार्म हाउस आयोजित तीन दिवसीय निवासी श्रम संस्कार शिविर का उद्घाटन जैन इरिगेशन के दिनेश देसाई, दिनेश दीक्षित, विनोदसिंह राजपूत, वी. के. पाटील, शिविर के मुख्य समन्वयक सुधीर पाटील, राहुल लांबोले, धनश्री पाडवी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। शिविर के प्रथम सत्र में दिनेश देसाई ने व्यक्तित्व विकास तथा दिनेश दीक्षित ने प्रेरणादायी मुद्दों से शिविरार्थियों को अवगत कराया। दोपहर के सत्र में राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम जलगाँव के प्रमुख डॉ. नितीन भारती ने व्यसन मुक्ति के संदर्भ में उपयुक्त जानकारी दी। इस शिविर में विनोदसिंह राजपूत ने शिविरार्थियों को खेती विषयक जानकारी देते हुए खेत पर प्रत्यक्ष मुलाकात कर सभी छात्रों को प्रात्यक्षीकरण दिया गया।

अमोघ जोशी और उनके सहयोगियों ने आकाश दर्शन के माध्यम से विभिन्न ग्रह एवं तारों की जानकारी तथा टेलिस्कॉप के माध्यम से विभिन्न ग्रह एवं चंद्र का प्रत्यक्ष दर्शन करवाया। इस अवसर पर शिविरार्थियों के द्वारा कुतुहल पूर्वक पूछे गए प्रश्नों का अमोध जोशी ने उत्तर प्रदान किया। योगेश संधानशिवे ने शिविरार्थियों को फोटोग्राफी के संदर्भ में मार्गदर्शन किया। शिविर के आखिरी दिन पिंपलगाँव के विक्रम पाटील ने 'गाँधीजी और पर्यावरण' इस संदर्भ में समझाते हुए पर्यावरणपूरक जीवनशैली की

आज के नन्हें बालक हम कल बड़े होंगे और जगत को प्रेरणा देंगे – बाल शिविरार्थी

संकल्पना को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया। भुजंगराव बोबडे ने 'जलगाँव जिले के ऐतिहासिक स्थल' के संदर्भ में जानकारी दी। व्रतनिष्ठ जीवन के संदर्भ में सुधीर पाटील ने मार्गदर्शन किया। तीन दिवसीय इस शिविर में राहुल लांबोले ने विद्यार्थियों को योगा के बारे में बतलाया। सहभागी विद्यार्थियों ने खेती, पर्यावरण, मोबाईल और सोशल मीडिया, प्लास्टिक इन विषयों पर अपनी प्रस्तुति की। शिविर में कुछ विभिन्न तरह के प्रयोग भी किए गए, जैसे परिसर की स्वच्छता, नल को बंद करना, पेड़-पौधों को पानी देना, भोजन के दौरान मौन व्रत का पालन करना आदि। इस प्रयोगों के माध्यम से शिविरार्थियों में एक तरह की सामाजिक संवेदना का निर्माण किया गया। शिविर के समापन अवसर पर राणीदानजी स्कूल के मुख्याध्यापक वी. के. पाटील तथा विनोदसिंह राजपूत उपस्थित थे। मंगेश देशमुख तथा राजू हरिमकर ने सहकार्य किया। ♦♦♦

खर्ची गाँव में आयोजित हुआ व्यसन मुक्ति जनजागृति कार्यक्रम

तुकडोजी महाराज की ग्रामगीता पर आधारित किर्तन की प्रस्तुति– गुलाबराव महाराज

खर्ची खुर्द और बुद्रुक गाँव एक दूसरे से जुडा हुआ गाँव है। खुर्द गाँव में करीब १२२९ और बुद्रुक गाँव में करीब २३४९ ऐसे कुल मिलाकर ३५७८ लोकसंख्या है। बा-बापू १५० कार्यक्रम के तहत गाँव में महिला बचत गट संघटन निर्माण, मशरूम उत्पाद और बिक्री, युवाओं के लिए प्रशिक्षण, किसानों के लिए विविध योजनाओं की जानकारी देना, ग्राम स्वच्छता कार्यक्रम, विद्यालय में बाल वाटिका का उपक्रम आदि कार्यों के माध्यम से गाँव में अच्छी पहल हो रही है। लेकिन व्यसन की समस्या ने हमारे युवा एवं किशोरों को बर्बाद कर रखा है। बा-बापू १५० के अंतर्गत व्यसन मुक्ति कार्यक्रम के माध्यम से गाँव को व्यसन मुक्त करने का उद्देश्य भी रखा है। गाँव में आध्यात्मिक प्रभाव से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण हो रहा है। युवा शक्ति को व्यसन से दूर ले जाना और गाँव के समग्र विकास में उनका जुड़ना यह प्रयोग बहुत से गाँवों में महत्त्वपुर्ण साबित हो रहा है। २८ मई २०१९ को खर्ची गाँव में व्यसनाधिनता विषय पर जनजागृति अभियान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज संस्थान से राष्ट्रीय किर्तनकार गुलाबराव महाराज ने व्यसन मुक्ति तथा ग्रामीण विकास पर प्रबोधन कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

उक्त कार्यक्रम में व्यसन के दुष्परिणाम तथा विकास कार्य में व्यसनों से उत्पन्न अवरोध का जिक्र किया तथा भटकती राह पर चल रही युवा शक्ति को सही राह दिखाई। इस कार्यक्रम का आयोजन खर्ची ग्राम और फाउण्डेशन के संयुक्त सहयोग से किया गया। युवा वर्ग ने कार्यक्रम में सहभाग लिया तथा महिला मंडल के सदस्यों ने विशेष उपस्थिति दर्शाई। सहभागीता ही विकास का प्रेरक है इस बात को खर्ची गाँव ने सार्थक किया।

रामदेववाडी

१० जून २०१९ को इस कार्यक्रम की अगली प्रस्तुति जलगाँव तालुका के रामदेववाडी में आयोजित किया गया। संध्या समय पर विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय किर्तनकार गुलाबराव महाराज ने आध्यात्मिक विषयों की शैली में सामाजिक प्रबोधन किया। ♦♦♦

‘संघर्ष से परिवर्तन की ओर’
कार्यशाला ने दिया जीवन को देखने का सकारात्मक दृष्टिकोण

फाउण्डेशन की ओर से ‘संघर्ष से परिवर्तन की और’ (conflict transformation) इस दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला में महाराष्ट्र के विविध भागों के शिक्षक, उद्योजक, व्यवसाय कर्ता तथा संस्थाओं के प्रतिनिधि मिलाकर कुल २६ सहभागियों ने हिस्सा लिया था। इस कार्यशाला में जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोण को कैसे सकारात्मक रखा जा सकता है इस पर विशेष जोर दिया गया।

४ और ५ मई के दौरान चली इस कार्यशाला में संघर्ष क्या है? संघर्ष के नाम, संकल्पनाएं, संघर्ष के विविध पहलू, संघर्ष निर्माण होने की वजह, कौन सी परिस्थिति में संघर्ष सकारात्मक और नकारात्मक होता है, संघर्ष को परिवर्तित करने की तकनीक तथा संघर्ष को रचनात्मक अनुभव कैसे बना सकते है ऐसी विभिन्न जानकारी को रोचक प्रस्तुति के माध्यम से डॉ. जॉन चेल्लदुरै तथा अश्विन झाला ने प्रस्तुत किया। डॉ. जॉन ने कहा कि, संघर्ष करते समय समझदारी दिखाई जाए तो उस परिस्थिति में से मार्ग निकाला जा सकता है। संघर्ष के समय मनुष्य ने स्वयं पर नियंत्रण रखना आवश्यक होता है, क्योंकि नियंत्रण से ही प्रगति के मार्ग मिलने लगते है। सामाजिक संघर्ष की व्याप्ति विषय के अनुसार बदलती जाती है। परंतु प्रत्येक संघर्ष से बदलाव मात्र निश्चित रूप से घटित होता है।

अश्विन झाला ने कार्यशाला में विभिन्न संकल्पना तथा खेलों के माध्यम से मानवीय संबंधों के बारे में विश्लेषण कर समझाया। एक-दूसरे से प्रेम और सुदृढ़ संबंध कैसे निर्माण करें इसके बारे में अनेक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया। अपने भीतर पड़ी सुषुप्त क्षमताओं को प्रदर्शित करने की शक्ति संघर्ष में होती है। इस कार्यशाला में सहभागी हुए सहयोगियों ने विविध खेलों में उत्साह के साथ सहभाग लिया तथा विविध अनुभवों का प्रस्तुतिकरण भी किया। फाउण्डेशन की ओर से सौ. अंबिका जैन की उपस्थिति सराहनीय रही तथा इस कार्यशाला का समन्वय नितीन चोपडा ने किया। ♦♦♦

कार्यशाला में सम्मिलित सहभागियों का समूह

सहभागियों के अभिप्राय:

Workshop was very interactive and giving tools for solving conflict.

Dilip Tiwari, Jalgaon

शिक्षिका होने के नाते विद्यालय में मुझे यह कार्यशाला अधिक उपयोग होगी। व्यक्तिगत जीवन में पती-पत्नी के संबंध स्थिर रखने के लिए भी उपयोग सिद्ध होगा।

भारती जाधव, मुंबई

Workshop provided a good thinking method.

Manoj Govindwar, Jalgaon

Totally interactive workshop conducted with the democratic approach and Gandhian ethos.

Dr. Jagdish Patil, Faizpur

संघर्ष को रचनात्मक रूप में परिवर्तित कर जीवन के लिए एक बेहतरीन स्थिति प्राप्त कर सकते हैं- डॉ. जॉन चेल्लदूरै

पाठकों के अभिमत

'खोज गाँधीजी की' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत – ***संपादक***

The articles I could read were very interesting, and the newsletter is well laid out.

***Michael Nagler,** USA*

....

आदरणीय संपादक,

सादर वंदन। मुझे लगता है, महात्मा गाँधी के विचारों का कार्य का व्यापक प्रचार-प्रसार होना आज के युग में जरूरत है। इन विचारों-कार्यों का मूल ध्वनि की और स्वरूप को वर्तमान संदर्भ में प्रगट करना होगा। गतिविधियां तो आप गाँधीजी के बताए अनुसार ही करते हैं यह काफी महत्त्व की बात है। अनुकरणीय है।

सप्रेम जय जगत्

***रामचंद्र राही,** गाँधी स्मारक निधी, राजघाट, नई दिल्ली*

....

सादर सप्रेम!

खोज गाँधीजी की पत्रिका का प्रत्येक अंक पठनीय और दर्शनीय, दोनों होता है। सुंदर मुद्रण से नेत्र तृप्त होते हैं और व्यक्त सुविधाओं से चित्र का संस्कार और तोष होता है। विगत अंकों में आपकी जिज्ञासा और पाठकवर्ग की प्रतिक्रिया पढ़ने को मिली। मासिक देने के लिए अत्यंत आभारी। बदलते समय में या अतीत और भविष्य में गाँधीजी के जीवन से कितना कुछ सीखा, कहाँ असहमति हुई, क्या सीख सकते हैं, क्या हमसे या इतिहास से अनजाना रह गया आदि से संबंधित कुछ विषयों पर पाठक कुछ लिखते रहें, अपने विचार व्यक्त करते रहें।

धन्यवाद।

***प्रो. डॉ. आनंदप्रकाश दिक्षित,** कलापी बंगला, पुना*

सर्वप्रथम आपका बहुत-बहुत धन्यवाद जो आपने हमें अपने संस्थान की पत्रिका 'खोज गाँधीजी की' भेजी। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा इस पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है, क्योंकि यह पत्रिका राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और उनके जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को और उनकी विचारधारा को समझने में सहायक है। यह पत्रिका हमें सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह के साथ ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यावहारिक जीवन पर गाँधीजी के विचारों को जानने एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों और प्रयासों को समझने में सहायता करती है। वर्तमान में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवस्था पतनोन्मुखी है। इस परिस्थिति में गाँधीजी के विचार हमें देश व समाज का पुनर्निर्माण करने में सहायक सिद्ध होंगे, क्योंकि गाँधीजी की विचारधारा पहले भी प्रासंगिक थी और आज भी प्रासंगिक है। महिला सशक्तिकरण, बुनियादी शिक्षा हेतु बाल बाटिका का निर्माण, टपक सिंचाई पद्धति के द्वारा स्कूलों में वाटिका का निर्माण, सामुदायिक गौशाला में केंचुआ खाद निर्माण इकाई को प्रारंभ करना, जल संरक्षण एवं जलदूत प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि गाँधीवादी विचारधारा को व्यावहारिक रुप प्रदान करने में निश्चित रूप से सफल होंगे। किंतु मेरा सुझाव है, कि आपकी संस्था द्वारा गाँधीवादी विचारधारा को मूर्त रूप देने हेतु किए जा रहे प्रयासों का अधिक विस्तार किया जाना चाहिए। उनके विचारों, कृत्यों एवं वर्तमान में उस पर किए जाने वाले प्रयासों का और अधिक प्रचार-प्रसार किये जाने की आवश्यकता है। इसके लिए आपके द्वारा प्रतिवर्ष होने वाली परीक्षा के लिए निर्धारित कुछ केंद्रों पर कार्यशाला, संगोष्ठी आदि का आयोजन किया जाना चाहिए एवं वर्ष भर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन निर्धारित शैक्षणिक संस्थाओं के सहयोग से किया जाना चाहिए। वर्तमान में गाँधीजी को लेकर जो भ्रम की स्थिति बनी है वह चिंता का विषय है। इस भ्रम को समाप्त करने एवं गाँधीजी की विचारधारा एवं कृत्यों को सही रूप में समझने हेतु अधिक प्रयास किए जाने चाहिए। पुन: आपको धन्यवाद।

***डॉ. शैलेन्द्र शर्मा,** आदर्श इन्स्टिट्यूट ऑफ मॅनेजमेंट एण्ड सायन्स, धार, मध्यप्रदेश*

♦♦♦

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

अब्दुल हनिफ, निदेशक, अलाईटेक पॉलीमर्स प्रा. लि., साउदी अरेबिया ०३.०५.२०१९

सेहुर, कृषी परामर्शक, नेदरलैंड ०३.०५.२०१९

सांटियागोड इदियाद्रो, राजदूत, युएसए ०७.०५.२०१९

दिलीप मालविया, न्यायाधिश, नागपूर १८.०५.२०१९

अबीक तेस्फाक, जनरल मॅनेजर, मल्टिप्रो इंटग्रेटेड फार्म, इथोपिया २९.०५.२०१९

R.N.I. No.: MAHBIL/2017/77584

मोहन से महात्मा – चित्र शृंखला–२६

गाँधी–टैगोर

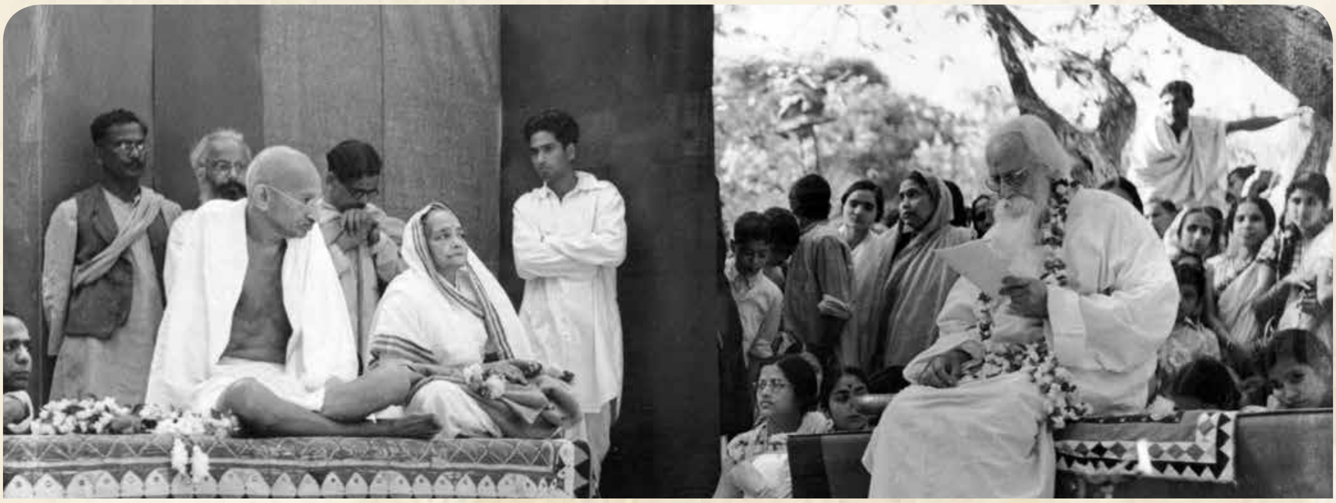

महात्मा गाँधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर एक सभा में, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल फरवरी, १९४०।

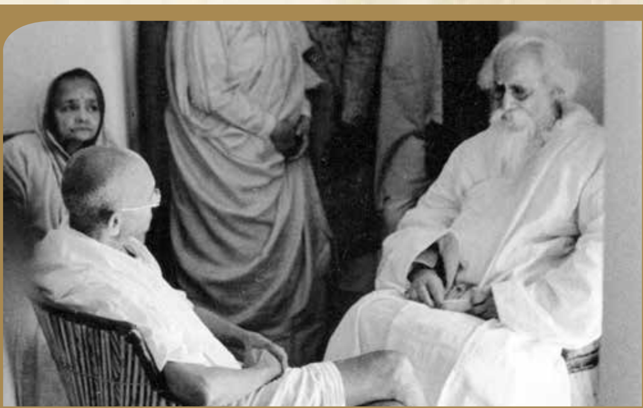

रवींद्रनाथ टैगोर अपने अतिथि महात्मा गाँधी और कस्तूरबा के साथ मिट्टी के घर श्यामली में, शांतिनिकेतन, वेस्ट बंगाल, फ़रवरी १९४०।

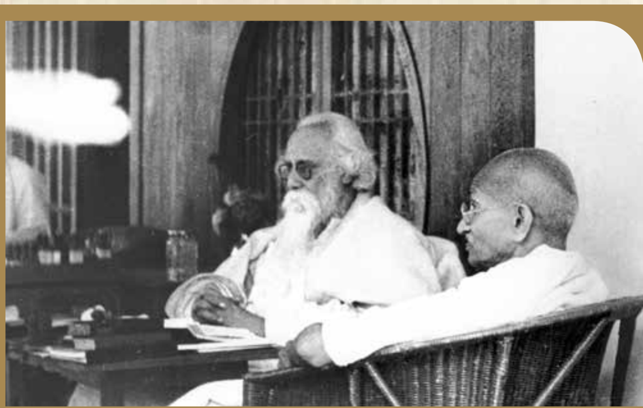

रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी और कस्तूरबा के लिए स्वागत संबोधन करते हुए, अमर कुंज, शांति निकेतन, फरवरी १९४०।

In the dealth of Rabindranath Tagore, we have not only lost the greatest poet of the age, but an ardent nationalist who was also a humanitarian. There was hardly any public activity on which he was not left the impress of his powerful personality. In Shantiniketan and Shriniketan, he has left a legacy to the whole nation, indeed, to the world. May the noble soul rest in peace and may those in charge at Shantiniketan prove worthy of the responsibility resting on their shoulders.

- Mahatma Gandhi

रवींद्रनाथ टैगोर की मृत्यु से हमने न केवल अपने युग का महानतम कवि खोया है, बल्कि एक उत्कृष्ट राष्ट्रवादी भी खोया है, जो राष्ट्रवादी होने के साथ–साथ मानवतावादी भी था। सार्वजनिक जीवन में शायद ही कोई ऐसी प्रवृत्ति होगी जिसपर उन्होंने अपने सशक्त व्यक्तित्व की छाप न छोड़ी हो। शांतिनिकेतन और श्री निकेतन के रूप में थे सारे राष्ट्र के लिए, बल्कि सारे विश्व के लिए, एक विरासत छोड़ गए हैं। भगवान उसकी आत्मा को शांति प्रदान करें, और जिन लोगों को वे शांतिनिकेतन का भार सौंप गए हैं वो उसके अनुरूप उतरें।

– महात्मा गाँधी

Printed Matter
Registered with R.N.I. No.: MAHBIL/2017/77584

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:
Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए **खोज गाँधीजी की** यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव–४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला।
प्रकाशन: २८ जून, २०१९; प्रेषित : २ जुलाई, २०१९